

आपातकाल

में

श्रृंखलित फुलवारी



पिंकी परुथी 'अनामिका'



आपातकाल में सृजन फुलवारी

पिंकी परूथी "अनामिका"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश



978-93-5372-100-8

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, पिकी परूथी "अनामिका"

मूल्य - 50.00 रुपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY PINKY PARUTHY ANAMIKA

वैधानिक चेतावनी:- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रूप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरूप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकी संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1. चिन्तन	6
2. संकट	7
3. सुन ले पुकार माँ	8
4. विश्वास	9
5. काश,...!	10
6. प्रेम में	11
7. घरबंदी	12
8. क्वारेन्टाइन अच्छा है	13
9. मैं व्यस्त हूँ,.....!	14
10. एकता पर्व	15
11. अल्पविराम	16
12. पुकार	17
13. जो बाकी है	18
14. नज़ारा	19
15. एक ही	20
16. हाँ, मैं प्रेम हूँ	21

चिन्तन

चाहे अल्पावधि के लिए ही सही,
स्वनिवास अन्तर्मन में,
पारदर्शी,
निःसंदेह सदैव ही था,
अनायास,
केंद्रित करने पर,
अनुपम,
अनुभूति,
आनन्ददायी, निर्गुण, निर्मल।
यूँ ही नहीं कह गए,
ऋषि मुनि,
तपस्या की महत्ता।
विवेकपूर्ण व्यवहार,
दानशीलता,
विनयशीलता,
संयम और स्वांकुश,
अल्पाहार,
मौनव्रत,
स्वावलम्बन,
उपासना सरल हैं,
किन्तु कठिन हैं,
क्योंकि,
यही तप है, योग है, नियम है,
निश्चय है, विजय।

संकट

अदृश्य,
लघु,
अत्यंत लघु कीटाणु से,
प्रभावित मनुष्य,
क्या सोचता है अब तक भी,
समझ ले तो अच्छा हो!
कि,
लोभ, अहंकार, स्थिति, शक्ति,
सब कुछ, कहाँ महत्वपूर्ण हैं?
भयपूर्ण जीवन से, मृत्यु ही श्रेष्ठ है।
संकट हो कैसा भी,
कटेगा तो अवश्य,
किन्तु,
ईश्वरीय कृपा से।
माना कि चिकित्साविज्ञान,
भौतिकी, रसायन विज्ञान,
पहुँच गए हैं शिखर पर,
लाचार है फिर भी, मानव जीवन।
संभावना भी है,
उत्तर भी और प्रत्युत्तर भी।
बुद्धिजीवी के लिए, एकान्त वरदान है,
और,
आततायी के लिए उत्तेजना।
स्वयं ही अन्तर कर लेना।
स्वयं को परिभाषित भी।

सुन ले पुकार माँ

मेहंदी, महावर, हार श्रृंगार,
व्यर्थ लगें, लगें बेकार।
करे गौरी, मान मनुहार।
हे माँ,
करो कोई ऐसा चमत्कार,
हरो पीड़ा,
दूर हो जाए,
विपदा, आपदा, महामार।
सजना से मिलने को,
चाहूँ, बार-बार,
क्या करूँ किन्तु,
वो उस पार, मैं इस पार।
हे भवानी,
तुम जानती हो,
पीड़ा हृदय की,
करो संकटों से,
घिरे हुए जनों का, तुम बेड़ा पार।
माँ शेरों वाली,
माँ जोताँ वाली,
करूँ मैं तेरी, जय जयकार।
बिछड़े हुआँ को तू मिला दे,
रोते हुआँ को तू हँसा दे,
बिगड़ी हुई दशा को, तू सँवारे,
सुन ले पुकार माँ, कर दे उद्धार।
कर मेरी प्रार्थना को, शीघ्र ही स्वीकार।

विश्वास

सुनो कृष्ण,
पा गए आश्रय,
गोवर्धन गिर की,
जिसे था विश्वास,
तुम पर।
और नियंत्रण,
स्वयं की इच्छाओं पर,
आज भी सुरक्षित है वो ही,
आत्म संयम का ज्ञान है जिसे,
और परमात्मा की सत्ता पर,
अटल विश्वास।
प्रकृति के नियमों का उल्लंघन,
किया गया अनगिनत बार,
संकेत परिणाम का,
दिया तुमने,
जाने कितनी बार।
मूढ़ता और अज्ञानता,
लालच और भोग की लालसा ने ,
अंधा, गूँगा और बहरा,
कर दिया,
मानवीय संवेदनाओं को,
चूर-चूर कर दिया,
संस्कारों और सभ्यता को।
निश्चित ही प्रकोप है प्रकृति का,
कोरोना के रूप में।

काश,...!

अपनी-अपनी सीमाओं में रहना,
अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करना,
ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करना,
कर्म,
और कर्म फल का भान होना।

सरल,
सहज होना ही,
धर्म है।
गुरु की वाणी,
और आज्ञा की,
पालना करना,
सत्य है,
सनातन धर्म है,
जीवन शैली है।
काश ये बात,
पूरी दुनिया के समझ में आ जाए।
फिर कोई दुविधा न हो,
बैर न हो,
मन मुटाव न हो,
अशान्ति न हो,
दुःख न हो।

प्रेम में

प्रेम में,
मगन हुई नवयौवना,
प्रेम करने लगी,
पक्षियों से,
कलरव से,,
सूरज से,
चन्दा से,
सखियों से,
पुष्पों से,
डाली से,
सुगन्ध से,
दिन से,
रात से,
तारों से,
चकवे और चकोरे से,
रंगों से,
सुरों और सुर-ताल से,
नृत्य से,
श्रृंगार से,
नदियों से,
पर्वत से,
झीलों से,
हाँ सत्य है,
प्रेम अद्भुत है,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है।

घरबन्दी

महानगरों की भीड़,
भागदौड़,
व्यस्तता थोड़ी थम सी गयी है,
हाँ,
शायद यह बहुत जरूरी था,
देखो ना,
बादल कितने साफ हो गए हैं,
धरती कितनी चमकदार हो गई है,
पेड़-पौधे कितने लहलहा रहे हैं,
पक्षी कितने चहचहा रहे हैं,
मनुष्य को बतला रहे हैं,
हम भी इसी पृथ्वी पर रहते हैं।
आज हम बिल्कुल स्वच्छंद हैं,
और तुम पिंजरे में बंद।
एक कीटाणु से सताए जा रहे हो।
अपनी बुद्धि और क्षमताओं का,
दुरुपयोग करते जा रहे थे वर्षों से,
स्वयं के पैदा किए गए,
मानव निर्मित जैविक हथियार,
आज तुम्हें ही डस रहे हैं।
निश्चित ही तुम खोज लोगे,
कोई ऐसा आविष्कार, पा लोगे,
नई-नई उपलब्धियाँ,
किन्तु निश्चित ही याद रखना,
यह घरबन्दी के दिनों को।
तभी ले पाओगे साँस, ताजी हवा में।

क्वारेन्टाइन अच्छा है

बरसों से ही,
क्वारेन्टाइन में रहने की आदत है मुझे।
पहले जरूर,
कुछ नीरस सा लगता था,
घर, घर और सिर्फ घर में ही,
थोड़ा कैद सा महसूस होता था,
पर धीरे-धीरे,
इस मजबूरी,
मजबूरी से आदत,
और आदत से एक मनमौजी,
बनने की सनक,
सनक ने पैदा किया,
मेरा दूसरा रूप,
वो रूप जिससे,
आज मैं खुद ही प्यार करती हूँ।
अपने आप को,
हमेशा व्यस्त रखने का हुनर,
और उसकी ही वजह से मिला,
वो सब कुछ,
जो शायद,
बिना क्वारेन्टाइन में रहकर,
नहीं पा सकती थी।
अपना वजूद,
अपने खयालों का साझा करने का मंच,
समूह सिर्फ अपनी सखियों का,
मित्र जिसने उभारा,
मेरे अन्दर छिपे हुए जज़्बातों को,
दिया उन्हें एक भरोसा,
हाँ! यह क्वारेन्टाइन बहुत अच्छा।

मैं व्यस्त हूँ,.....!

हाँ! इन दिनों में, मैं थोड़ी व्यस्त हूँ।
बेटे के वर्क फ्रॉम होम,
बेटी की परीक्षा की तैयारी में,
पति की अस्पताल की इयूटी में,
उन सब की इयूटी देने में,
इन दिनों में, मैं थोड़ी व्यस्त हूँ।
सखियों के लिए अभी समय नहीं निकलता,
उन्हें मेरे फोन का इंतजार है रहता,
मेड के काम निपटाने में,
फरमाइशी पकवान बनाने में,
अपने बच्चों के साथ,
यादगार पल बिताने में,
हाँ! इन दिनों में, मैं थोड़ी व्यस्त हूँ।
कपड़े भी धुलाई के कुछ,
ज्यादा ही हैं आजकल,
बर्तनों पर भी कोई कंट्रोल नहीं है आजकल,
साफ सफाई और सेनेटाइज़ेशन में,
बीतता है बहुत समय आजकल,
पति देव के कपड़े अलग धुलते हैं आजकल,
बाल नहीं बना पाती दो-दो दिन तक आजकल,
पता नहीं,
फिर भी इतनी खुश, कैसे रहती हूँ आजकल,
सबको घर में देखने में,
सचमुच मैं यह जीवन जीने में,
हाँ! इन दिनों में, मैं थोड़ी व्यस्त हूँ।
परिवार के साथ आनंद पूर्वक जीवन शैली में,
तालियाँ बजाने में, अंताक्षरी खेलने में, दीए जलाने में,
उन्हें घर के रीति, रिवाज, आरती, पूजा सिखलाने में,
प्राणायाम और सूर्य नमस्कार कराने में,
मैं थोड़ी व्यस्त हूँ।

एकता पर्व

दीए,
प्रेम के,
आस्था और विश्वास के,
एकता के,
समर्पण के,
त्याग के,
सकारात्मकता के,
भाईचारे के,
सद्भावना के,
अवश्य जलाएँगे हम।
ऊर्जा का संचार,
शक्ति का प्रसार,
सदाचार का आधार,
संस्कृति का प्रचार,
तिमिर पर प्रहार,
जानेगा संसार,
भारत भूमि के जनों का,
आचरण और व्यवहार।
बनाएँगे आज हम,
ऐसी दीप श्रृंखलाएँ,
आज मनाएँगे मिलकर,
ऐसा एक त्योहार,
इतिहास जानेगा इसे,
"एकता पर्व" के नाम से।

अल्पविराम

मृदा के संरक्षण के लिए,
फसल चक्र को भी,
दिया जाता है, अल्पविराम।
फिल्म की कहानी में,
उसे मनोरंजक बनाने के लिए,
दिया जाता है, मध्यांतर।
नाटकों के मंचन में,
रोमांच पैदा करने के लिए,
दिया जाता है, मध्यांतर।
खेलों में भी आधे समय में होता है
मध्यावकाश,
ताकि खिलाड़ी,
नए जोश के साथ, दुबारा मैदान पर आए।
विद्यालय में, पढ़ाई के बीच,
विद्यार्थियों को मिलता है,
मध्यावकाश,
जिससे हर विषय को पढ़ने में,
बना रहे एक जैसा उत्साह।
यानि थोड़ा रुकना, अच्छा है,
ज्यादा आगे जाने के लिए।
थोड़ा सुस्ताना अच्छा है,
ऊँची चढ़ाई चढ़ने के लिए।
थोड़ा विश्राम आवश्यक है,
खेल में जीतने के लिए।
नई भूमिका बनाने के लिए,
अपनी बुद्धि और क्षमताओं को परखने के लिए,
बदलाव के लिए,
परियोजना को सफल बनाने के लिए,
कोई रणनीति बनाने के लिए,
हाँ! 'अल्पविराम' बहुत जरूरी।

पुकार

में,
आगाह, करती रही,
बार-बार।
अवसर भी देती रही,
सुधरने का कई बार।
हठ करते रहे, तुम हर बार।
कठोर है, परिणाम यह,
आपदा, विपदा में है आज,
सारा संसार।
सजा पा रहे हो,
घरों में हो बन्द,
दूर दूर तक है सब सुनसान,
सूना पड़ा है बाजार।
अभी भी है समय,
होकर सचेत, समझो मेरे संकेत,
दुखी तुम हो तो,
में भी हूँ दुखी,
में प्रकृति,
में तुम्हारी माँ,
रक्षा करूँगी सदा ही,
रोक लेना किन्तु,
हों जब भी, मुझ पर अत्याचार।
कर लेना, अपनी गलती सुधार,
सुनो,
प्रकृति माँ की पुकार।

जो बाकी है

है रफ्तार कम तो क्या हुआ,
जिन्दगी हुई,
थोड़ी बेहाल तो फिर क्या हुआ,
बिगड़ गए हैं जो हालात,
तो फिर क्या हुआ,
ज़रा से खौफनाक हुए हैं मंज़र,
तो क्या हुआ,
मौकापरस्त हो गए चंद लोग,
तो फिर क्या हुआ।
ख्वाब हैं, ख्वाहिशें हैं, धड़कने हैं,
तो रास्ते खुदबखुद बना लेंगे हम।
मौत से डरते नहीं लेकिन,
आने देंगे नहीं अभी,
क्योंकि,
कुछ पाना बाकी है,
कुछ करना बाकी है,
आने वाले कल के लिए,
इतिहास बनाना बाकी है।
हौंसलों की उड़ान,
बन के तूफान,
पार कर लेगी सारे इम्तहान।
जिन्दगी थोड़ा सा सब्र कर,
पा लेने दे वो मुकाम,
जो पाना बाकी है।
पा लेने दे वो मुकाम,
जो पाना बाकी है।

नज़ारा

सपने,
सपनों में अपने,
अपनों से बातें,
बातें मुलाकातें,
मुलाकातें,
बीत जाएँ रातें,
रातों का नज़ारा,
नज़ारे में चाँद तारे,
चाँद तारों की कहानी,
कहानी में मिलना,
मिलना बिछुड़ना,
बिछुड़ने का डर,
डर से मैं काँप जाऊँ,
काँपकर मैं जाग जाऊँ,
जागते ही तुमको,
मैं मिलना चाहूँ,
ऐसा ही नज़ारा,
हर रोज़ मेरे,
सपनों में आए।

एक ही

भाषा,
जाति,
धर्म,
रंग,
रूप के आधार पर,
लालच,
ईर्ष्या,
द्वेष,
अहंकार जन्म लेते हैं।
क्यों न ये,
सीमा रेखाएँ ही,
मिटा दी जाएँ।
एक ही भाषा,
प्रेम की,
एक ही जाति,
मनुष्य की,
एक ही धर्म,
कर्तव्य का,
एक ही रंग,
मानवता का,
एक ही रूप आत्मतत्त्व का।
समरसता का आनन्द,
शान्ति का आगमन,
सुख संपदा का निवास,
तभी संभव है।

हाँ, मैं प्रेम हूँ

में,

अनुभूति, सुखद, अनुपम, अद्भुत,,
हाँ, मैं प्रेम हूँ।

कभी विरह में अश्रु बन बहती,
माया से भी भ्रमित न होती,
चर, अचराचार और प्रकृति में,
विद्यमान में सदा ही रहती,
हाँ, मैं प्रेम हूँ।

दया, करुणा, ममता, ये भी मेरे नाम,
हर जीव में, हर प्राणी में,
करूँ सदा विश्राम।
मन उत्साहित, तन आंदोलित,
सुनकर ही यह नाम,
हाँ, मैं प्रेम हूँ।

संयम, विश्वास,
समर्पण, त्याग, रहते हैं मेरे धाम,
व्यापक, विस्तृत,
अर्थ को मेरे समझे वही
हो जो सदैव निष्काम,
हाँ, मैं प्रेम हूँ।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का



रचनाकार

पिंकी परुथी 'अनामिका'

कोटा रोड, बारां
राजस्थान-३२५२०५

Email- pp.pinky97@gmail.com

Mobile - 9414257474

आपदा, विपदा कहकर नहीं आती, जिसके लिए हम पहले से तैयार रहें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कुछ चेतावनियाँ कभी-कभी अवश्य दी जाती हैं किन्तु कब वह आपदा विकराल रूप धारण कर ले, इसका अनुमान लगाना कठिन होता है। आपातकाल जैसी स्थिति से निपटने के लिए संयम, समय प्रबंधन और सरकारी आदेशों का पालन करना चाहिए।

आपसी सहयोग, अनुशासन, सकारात्मक सोच किसी भी कठिन समय में सहायक होते हैं। रचनात्मक कार्यों में संलग्न होना भी आपातकाल की स्थिति में स्वयं की मानसिक स्थिति को अवसाद में जाने से रोकती है। रचनात्मक कार्य जो अपने अपने घरों में बैठकर ही किए जा सकें, उनका थोड़ा थोड़ा ज्ञान सभी को होना चाहिए। हमारे द्वारा किए गए रचनात्मक कार्य, दूसरों के लिए भी प्रेरणा बन जाते हैं और समाज में सकारात्मक परिवर्तन होता है।

अन्तरा शब्दशक्ति समूह और प्रकाशन की संस्थापिका डॉ प्रीति समकित सुराना ने एक अभियान चलाया आपातकाल में रचनात्मकता, जिससे जुड़कर मैं गौरवान्वित हूँ कि मैंने पंद्रह रचनाएँ लिख डालीं, और वे उनका संपादन और प्रकाशन भी कर रही हैं। लॉकडाउन के समय का इससे अच्छा सदुपयोग क्या हो सकता है।

दिल से आभार प्रिय मित्र।

अंत में कहना चाहती हूँ कि आप अपनी अपनी रुचि के अनुसार कोई भी काम कर सकते हैं, जैसे आर्ट एंड क्राफ्ट, सिलाई कढ़ाई बुनाई, चित्रकारी, कुकिंग के नए-नए रचनात्मक प्रयोग, गायकी, वाद्ययंत्र सीखना, लेखन आदि।



पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क - 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com



978-93-5372-100-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- <https://www.facebook.com/antrashabdshakti/>

Fecbook group:- <https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/>